D. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari College Darbhanga

नई आर्थिक नीति
NEW Economic Policy.

भारत में नई आर्थिक नीति जुन 1991 में आर्थिक संकट से निपटने के लिए आरंभ की गयी। इसी दौरान के अनुसार नई आर्थिक नीति 1991 में आरंभ की गयी। जिसमें विभिन्न निजी संबंधी उपाय तथा परिवर्तन सम्मिलित है इन सभी उपायों की एक ही भावना है उद्देश्य सरल है तथा वह नियंत्रणों की बहुसंख्या की संभावना वाले मंत्रालय की कार्य कुशलता को सुधारना और बढ़ी हुई प्रतियोगिता को निजी क्षेत्रों में सुधारना है। नई आर्थिक नीति ने अर्थव्यवस्था में अधिक प्रतियोगिता पूर्ण वातावरण लाने का प्रयत्न किया है। जिससे अर्थव्यवस्था की उत्पादकता और कार्य कुशलता में सुधार हो अतः नई आर्थिक नीति की प्राप्ति के लिए वित्तीय नीति, औद्योगिक नीति, व्यापार नीति राजकोषीय नीति एवं मौद्रिक नीति में महत्वपूर्ण सुधार किये गए।

आर्थिक सुधार का अर्थ है देश में चली आ रही पुरानी आर्थिक नीतियों में बदलाव तथा आर्थिक नीति फिर से निर्माण, आर्थिक नीतियों में नये सिरे से निर्माण, जिससे विकास की गति तेज हो सके तथा कुशलता में सुधार हो 1991 में जुन के बाद देश में चलाए जा रहे पुराने नीतियों में आमूल परिवर्तन किये गए जिसे नई आर्थिक नीति कहते हैं पुरानी नीतियों में आमूल-परिवर्तन को आर्थिक सुधार नाम दिया गया। देश में पहले सरकार की भूमिका एवं सार्वजनिक क्षेत्र को अधिक महत्व दिया गया था। सरकार के नियमन एवं नियंत्रण तथा नियोजन द्वारा देश का आर्थिक विकास संचालित हो रहा था। यह महसूस किया गया कि सरकारी नियंत्रण प्रशासनिक नियंत्रण के कारण स्वतंत्र रूप से देश का विकास नहीं हो सका। लाइसेंस परमिट राज के कारण न तो देश का तीव्र औद्योगिक विकास हो सका न ही कुशलता में सुधार बल्कि भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला है। इसलिए यह महसूस किया गया कि बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय माहौल के अनुरूप भारत के नीतियों में परिवर्तन की नितांत आवश्यकता है। तीव्र औद्योगिकरण एवं आर्थिक विकास की प्राप्ति के लिए आर्थिक नीतियों में बदलाव एवं नये सिरे से उनका निर्माण एवं क्रियान्वयन की जरूरत है। भारतीय अनियंत्रण की नीति लागु करने की आवश्यकता है। बाजार मित्रवत दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। इसी सोच के तहत देश में आर्थिक सुधारों का कार्यक्रम लागु किया गया जिसमें देश के वित्तीय नीति, औद्योगिक नीति, विदेशी व्यापार नीति, विदेशी पूँजी नीति, सार्वजनिक क्षेत्र नीति मौद्रिक नीति, आदि में आमूल परिवर्तन किये गए।

जब आर्थिक नीति लागु की गयी उस समय भारत के वित्त मंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह थे, उनका नयी नीति आरंभ करने के पीछे मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित था।

1. भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्वीकरण के मैदान में उतारने के साथ-साथ इसे बाजार के रुख के अनुरूप बनाना।
2. मुद्रा स्फिति की दर को नीचे लाना और भुगतान असंतुलन को दूर करना।
3. आर्थिक विकास दर को बढ़ाना और विदेशी मुद्रा के पर्याप्त भंडार का निर्माण करना,
4. आर्थिक स्थिरीकरण प्राप्त करने के साथ-साथ सभी प्रकार के अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाना। अर्थव्यवस्था के लिए बाजार अनुरूप एक आर्थिक परिवर्तन लाना।
5. प्रतिबंधों को हटाकर माल सेवाओं, पूंजी, मानव संसाधन और प्रौद्योगिकी के अन्तर्राष्ट्रीय

Scanned by CamScanner

प्रवाह की अनुमति प्रदान करना।

6. अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में निजी कम्पनियों की भागीदारी बढ़ाना। इसी कारण सरकार के लिए आरक्षित क्षेत्रों की संख्या घटाकर 3 कर दिया गया।

इस प्रकार नई आर्थिक नीति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में कुछ हद तक सफल रही और देश की अर्थव्यवस्था को बल मिला। नई आर्थिक नीति की उपरोक्त उद्देश्यों के अतिरिक्त इसकी कई विशेषताएँ भी है जिसके कारण नयी आर्थिक नीति सफल रही। नई आर्थिक नीति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. नई आर्थिक नीति में केवल दो उद्योग लाईसेंस योजना के तहत रखा गया था।
2. निजी क्षेत्र के लिए प्रवेश। तथा सार्वजनिक क्षेत्र की सुविधा केवल चार उद्योगों तक ही सीमित था।
3. नई आर्थिक नीति में विदेशी नीति के उदारीकरण। विदेशी इक्विटी की सीमा की गतिविधियों में 100% करने के लिए कदम उठाया गया था। यानी एनआरआई और विदेशी निवेशकों को भारतीय कम्पनियों में निवेश करने की अनुमति दी गयी।
4. तकनीकि क्षेत्र में उदारीकरण। स्वत: अनुमति विदेशी कम्पनियों के साथ प्रौद्योगिकी समझौतों पर हस्ताक्षर करने के लिए भारतीय कम्पनियों को दिया गया था।
5. विदेशी निवेश संवर्धन एफआईपीबी की स्थापना करना। इस बोर्ड को बढ़ावा देने और भारत में विदेशी निवेश के लिए स्थापित किया गया था
6. लघु उद्योगों की स्थापना करना। विभिन्न भागों लघु उद्योगों को देने की पेशकश कर रहे थे।

इस प्रकार नयी आर्थिक नीति के तीन प्रमुख घटक या तत्व हैं। (1) उदारीकरण (2) निजीकरण (3) वैश्वीकरण

(1) उदारीकरण — नई आर्थिक नीति में उदारीकरण 1991 भारतीय कम्पनियों में निम्नलिखित तरीके से उदारीकरण से पहले उद्योगों पर रख दिया गया जो की लाईसेंस कोटा और कई तरह के अधिक प्रतिबंध और नियंत्रण का अंत करने के लिए संदर्भित करता है। कुछ को छोड़कर लाईसेंस का उन्मूलन, कीमतें तय करने में स्वतंत्रता, आयात और निर्यात में उदारीकरण, माल और सेवाओं के आंदोलन में स्वतंत्रता, माल और सेवाओं की कीमतें तय करने में स्वतंत्रता।

(2) निजीकरण — निजीकरण निजी क्षेत्र की बड़ी भूमिका देने और सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को कम करने के लिए संदर्भित करता है निजी सरकार की नीति पर अमल करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए।

1. सार्वजनिक क्षेत्र, यानी निजी क्षेत्र के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम के हस्तांतरण का विनिवेश।
2. औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बीआईएफआर के कोई का स्थापना करना इस बोर्ड के नुकसान पीड़ित सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में की इकाईयों को पुनर्गठित करने के लिए स्थापित किया गया था।
3. सरकार के हिस्सेदारी के कमजोर पड़ने। विनिवेश के लिए निजी क्षेत्र की प्रतिक्रिया में 51% से अधिक शेयरों का अधिग्रहण यह तो निजी क्षेत्र के लिए स्वामित्व और प्रबंधन के हस्तांतरण में यह परिणाम है।

(3) वैश्वीकरण — यह दुनिया के विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण के लिए संदर्भित करता है।

Scanned by CamScanner

1991 तक भारत सरकार ने आयात और निर्यात आदि का आयात टारिफ, प्रतिबंध के लिए लाईसेंस के लिए, लेकिन नई आर्थिक नीति सरकार निम्नलिखित उपायों द्वारा वैश्वीकरण की नीति अपनाने के बाद इस संबंध में विदेशी निवेश से संबंधित सख्त नीति का पालन किया गया था। वैश्वीकरण के कारण विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के एकीकरण के लिए अनेक कदम उठाए गए जिससे वैश्वीकरण की नीति को लागू किया गया।

* आयात उदारीकरण। सरकार पूँजीगत वस्तुओं के आयात से कई प्रतिबंध हटाया गया। या उसका नियम बदल दिया गया

* विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम (फेरा) विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम के द्वारा बदल दिया गया, टैरिफ संरचना का उत्तीकरण, निर्यात शुल्क का उन्मूलन, आयात शुल्क में कमी इत्यादि में बदलाव किया गया।

वैश्वीकरण एक परिणाम के रूप में भौतिक सीमाओं और राजनीतिक सीमाओं में व्यापार उद्यम के लिए कई अवरोध बने रहे। सारी दुनियाँ एक वैश्वीक गाँव बन जाता है वैश्वीकरण वैश्वीक अर्थव्यवस्था के विभिन्न राष्ट्रों के बीच अधिक से अधिक सम्पर्क और अन्योन्याश्रय शामिल है।

इस प्रकार नई आर्थिक नीति जुन 1991 में नरसिंह राव सरकार ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की यह दिशा, उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के नाम से हम सभी जानते हैं उदारीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण के कारण विश्व में भारत की अर्थव्यवस्था को बल मिला है उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण जिसे हम (एल पी जी मॉडल के रूप) में जानते हैं एल पी जी मॉडल पुरे देश में आर्थिक सुधारों के रूप में लागु की गई। इस नयी औद्योगिक के तहत सरकार ने कई ऐसे क्षेत्रों में निजी कम्पनियों को प्रवेश करने की अनुमति दी, जो पहले केवल सरकारी क्षेत्र के लिए आरक्षित थे। नयी आर्थिक नीति को लागु करने के पीछे मुख्य कारण भुगतान संतुलन (BOP) का निरंतर नाकारात्मक होना था। 1991 के बाद भारत के आर्थिक इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ। इसके पहले देश गम्भीर आर्थिक संकट से गुजर रहा था। इसी संकट ने भारत के नीति निर्माताओं को आर्थिक नीति को लागु करने के लिए मजबुर कर दिया था। संकट से उत्पन्न स्थिति ने सरकार को मुख्य स्थिरीकरण और संरचनात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से नीतियों का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया। स्थिरीकरण की नीतियों का उद्देश्य कमजोरियों को ठीक करना था। जिससे राजकोषीय घाटा और विपरित भुगतान संतुलन को ठीक किया जा सके। संरचनात्मक सुधारों ने कठोर नियमों को दुर कर दिया था। जिसके कारण सुधारों को भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में लागु किया गया। इन्हीं नीतियों का परिणाम है कि आज भारत अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसे वैश्वीक आर्थिक संस्थान को भी मदद दे सकता है।